**ए सबद मैं दृढ़ किए, पिया ना करें निरास।**
**रूह मेरी यों कहे, होसी दुलहेसों विलास।।७१ ।।**

इन शब्दों से मैंने निश्चय कर लिया है कि अब मेरे प्रीतम मुझे निराश नहीं करेंगे। मेरी आत्मा भी कहती है कि तुझे दूल्हा मिलेंगे।

**नबी सबद मोहे मद चढ़्यो, बढ़्यो बल महामत।**
**अब एक खिन ना रहे सकूं, उड़ गई कहुंए स्वांत।।७२ ।।**

रसूल के इन शब्दों को सुनकर श्री महामतिजी कहती हैं कि वह अलमस्त हो गईं। मेरी आत्मा धनी मिलने के लिए अशान्त हो गई (तड़पने लगी)।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १४९ ।।

## सनन्ध विरह तामस की

**नोट** : प्यारे सुन्दरसाथजी! यह तामस का विरह तब हुआ, जब दिल्ली में गोवर्धनदास और लालदास के बीच कुरान सुनने के बाद विचारों में अन्तर आ गया। लालदासजी ने स्वामीजी से कहा कि हमारा यकीन तो चटाई तक है। तब श्रीजी को सारा वृतान्त सुनने पर जोश आया और सब जागनी का काम छोड़कर सबको अलग-अलग भेज दिया। स्वयं अनूपशहर को चले तो रास्ते में स्वास्थ्य अधिक खराब होने पर सनन्ध ग्रन्थ उतरा। उस समय यह विरहा तामस में हुआ, उसे लिखा है।

**मैं चाहत न स्वांत इन भांत,**
**अजू आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर।**
**दरद देहा जरद गरद रद करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर।। १ ।।**

स्वामीजी तामस में हैं और अपने आप से विचार कर रहे हैं कि जागनी के काम में सुन्दरसाथ के असहयोग से मुझे निराशावादी नहीं होना चाहिए। मैं इस तरह से शान्ति नहीं चाहता। मेरे तन के सभी अंग चलते हैं और निराशा की हालत में आंखों से आंसू भी नहीं आ रहे हैं। धनी के दर्द से मेरा शरीर पीला हो गया है, लस्त हो गया है, धूल के समान मिट्टी हो गया है। अब मुझे मिट जाने वाले तन से कैसे धैर्य हो?

**कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक बंको सूरों किने न अगमाए।**
**धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए।। २ ।।**

धनी के प्रेम का रास्ता बड़ा कठिन है। इसमें कई कर्म काण्ड, उपासना काण्ड और ज्ञान काण्ड के टेढ़े रास्ते हैं, जिन पर बड़े-बड़े शूरवीर चलने वाले भी इस प्रेम मार्ग पर नहीं चल सकते। यह रास्ता तलवार की धार पर चलने के समान है। इस रास्ते में सामने से गुण, अंग, इन्द्रियों के भाले छेदते हैं, इसलिए हे मेरी आत्मा! तुम धैर्य और साहस का शृंगार करके चलो।

**सागर नीर खारे लेहेरें मार मारे फिरे, बेटों बीच बेसुध पछाड़ खावे।**
**खेले मच्छ मिले गले ले उछाले, संधो संध बंधे अन्धों योंज भावे।। ३ ।।**

इस सारे भवसागर में माया की लहरें थपेड़े मारती हैं। इससे यह जीव छोटे-छोटे टापुओं से टकरा कर बेसुध हो जाता है, अर्थात् कमजोर दिल वाले साथियों के असहयोग से निराशा होती है। इस भवसागर में बड़े-बड़े मगरमच्छ हैं, जो एक-दूसरे को निगल रहे हैं। बड़े-बड़े गादीपति (गद्दी धारी), महन्त, धर्माचार्य

Nijanand App

ज्ञान से साधारण मनुष्य को भटकाते हैं। इस तरह यह मनुष्य धर्मों के जटिल बन्धनों से बंधकर इसी को अच्छा समझ रहे हैं।

**दाहो दसे दसो दिस सब धखे, लाल झाला चले इंड न झलाए।**
**फोर आसमान फिरे सिर सिखरों, ए फलंग उलंघ संग खसम मिलाए।।४ ।।**

भवसागर, दसों दिशाओं से इन बड़े लोगों को काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, मद, मत्सर की ज्वालाओं से जलाता है। इसलिए, हे मेरी आत्मा! तुम इन सबसे बचो और क्षर ब्रह्माण्ड को ही फोड़कर धनी का ध्यान करके भवसागर को छलांग लगाकर पार कर लो। धनी तुम्हें मिल जाएंगे।

**घाट अवघाट सिलपाट अति सलवली, तहां हाथ न टिके पपील पाए।**
**वाओ वाए बढ़े आग फैलाए चढ़े, जले पर अनल ना चले उड़ाए।।५ ।।**

इस भवसागर के घाट टूटे-फूटे हैं, अवघाट हैं तथा इनके पत्थरों पर काई (सिल की चिकनाहट) है, अर्थात् यहां साधु, महात्माओं, धर्माचार्यों, कर्मकाण्डियों, कुटम्ब की लोक-लाज में भटकने वालों को कितना ही समझाओ उनके मनों पर लोभ की चिकनी काई लगी है, इसलिए कोई असर नहीं होता। इस लोभ (चिकनी सिल) का इतना जबर्दस्त प्रभाव है कि यहां चींटी भी चलकर फिसलती है, अर्थात् साधारण जीव तो चल ही नहीं सकता। इनकी चाहनाओं की पूर्ति के लिए चारों तरफ इनके सेवक प्रचार-प्रसार में लगे हैं। लोभ की अग्नि को धधका रहे हैं, जिससे साधारण जीव के इश्क और ईमान डोल जाते हैं तथा इस कठिन रास्ते को पार नहीं कर पाते।

**पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैठ सकोड़ सुई नाके समाए।**
**डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए।।६ ।।**

अब महामतिजी अपनी आत्मा से कहते हैं, ऐसे टेढ़े रास्ते तथा स्थितियों में अपनी ही शक्ति से हाथी की चाल घण्टे बजाते चलो, अर्थात् यदि कोई निन्दा करता है या रास्ते में बाधाएं डालता है, तो उसकी तरफ ध्यान मत दो। धनी की मेहर (कृपा) का पाखर (कवच) पहनकर इश्क और ईमान के घण्टे बजाते चलो। साहस का सहारा लेकर लक्ष्य की ओर चलते रहो। संसार के मान-अपमान की तरफ से अपने को सिकोड़कर इतना छोटा बना लो कि सुई के नाके से निकल सको, अर्थात् मान-अपमान की तरफ ध्यान ही न जाने दो। हे मेरी आत्मा! तुम माया की सब चाहनाओं को ऐसे छोड़ दो जैसे शरीर छोड़ा ज़ाता है और भूलकर भी इनकी तरफ ध्यान न दो, अर्थात् जिन्होंने साथ नहीं निभाया उनके बारे में मत सोचो। तुम अपने ही बल से पहाड़ पर चढ़कर कूद जाओ, अर्थात् साहस करके इस जागनी के कार्य में लग जाओ।

**बहुत बंध फंद धंध अंजू कई बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाख न आवे।**
**निराकार सुन्य पार के पार पिउ वतन, इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे।।७ ।।**

अभी भी तेरे सामने इस रास्ते में झंझटें आएंगी। वह दिखाई देंगी, पर अभी से उनका कुछ अनुमान नहीं किया जा सकता। फिर भी तू दृढ़ता के साथ ध्यान कर कि मेरे धनी निराकार शून्य के पार और अक्षर से परे परमधाम में है, जहां बिना धाम-धनी की मर्जी से कोई आ नहीं सकता।

Nijanand App

**मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विश्वास।**
**कहे महामती इन भांत तो रंग रती, दई पियाऐं अग्या जाग करूं विलास।। ८ ।।**

हे मेरी आत्मा! इस तरह के वचनों को विचारकर अपने तन-मन को शक्तिशाली बनाकर अपने धनी में दृढ़ विश्वास रखो। इस तरह से महामतिजी कहती हैं कि धनी के प्रेम में रंग जाने पर ही धनी की आज्ञा होगी और मैं घर में जाकर धनी से आनन्द विलास करूंगी।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १५७ ।।

## सनन्ध विरह इस्क वृध की

**तलफे तारुनी रे, दुलही को दिल दे।**
**सनमंध मूल जानके, सेज सुरंगी पर ले।। १ ।।**

मैं आपकी युवा अंगना हूं और आपके वियोग में तड़प रही हूं। कृपा करके मुझ दुलहिन को अपना दिल देकर परमधाम का मूल सम्बन्ध जानकर अपने इश्क और प्यार की सेज्या पर स्वीकार करें।

**सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस।**
**न आवे अंदर बाहेर, या बिध सूकत स्वांस।। २ ।।**

आपके वियोग ने मेरा शरीर जर्जर कर दिया है। इसमें खून भी सूख गया है। मांस भी गल गया है। अब सांस लेना भी भारी हो गया है।

**हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन।**
**मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन।। ३ ।।**

मेरे तन की सब हड्डियां लकड़ी बन गई हैं। सिर आपके विरह की अग्नि में नारियल बन चुका है। अब मांस मज्जा, खून और नसों को अग्नि में हवन कर देती हूं।

**रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार।**
**पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार।। ४ ।।**

मेरे रोम-रोम में आपके विरह के सूए चुभ रहे हैं। तलवार की धार (आपका विरह) से अंग टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। हे धनी! मैं आपके विरह में आपकी दुःखी अंगना हूं। आप कृपा करके मेरा हाल तो पूछ लो।

**ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाए।**
**ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाए।। ५ ।।**

आपके विरह के दर्द को वही जानता है, जिसके कलेजे में विरह के घाव लगे होते हैं। इस कठोर दर्द की कोई दवा नहीं है। यह तो लगातार फैलता ही जाता है।

**ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग।**
**हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग।। ६ ।।**

हे मेरे धनी! आपके विरह का दर्द बड़ा कठिन है। आभूषण, जला देने वाली अग्नि के समान लगते हैं। हीरे और सोने के पलंग जिन पर कोमल गद्दा बिछा होता है, वह सुख की बजाय विरह का दुःख बढ़ाते हैं।

Nijanand App